International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 24-05-2024, Accepted: 19-06-2024, Published: 12-07-2024
Volume 6, Issue 3, 2024, Page No. 11-14

18वीं शताब्दी के रुहेलखण्ड में रुहेला अफ़गानों की सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप

डॉ. सुधीर कुमार वर्मा
इतिहास विभाग, डी.बी.एस. कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही रुहेला अफगान मध्य एशिया के रोह पहाड़ी क्षेत्र से आकर उत्तर भारत के कटेहर क्षेत्र में प्रवासित हुए और अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक इन्हीं रुहेला अपफगानों के द्वारा इस क्षेत्र पर अपनी प्रभुसत्ता स्थापित कर ली गई। कटेहर क्षेत्र में रुहेलों की सत्ता स्थापना के कारण ही इसको रुहेलखण्ड के नाम से जाना जाने लगा।[1] कटेहर क्षेत्र में रुहेलों के प्रवास के कारण मूलतः आर्थिक ही नजर आते हैं क्योंकि यह अपने मूल स्थान एशिया (खोरासान) की विषम भौगोलिक परिस्थितियों एवं जीविका की कठिन परिस्थितियों के कारण ही अपने बेहतर भविष्य की तलाश में यहाँ पर आये थे।[2] जबकि दूसरी तरफ रुहेलखण्ड की सैन्य व्यवस्था में उन्हें बेहतर रोजगार की प्राप्ति हो रही थी। साथ ही उत्तर–पश्चिम से होने वाले व्यापार में भी अफगानों की पर्याप्त संलग्नता बनी हुई थी विशेषकर घोड़ों के व्यापार में पाविन्दा, युसुफजई जैसे अफगान कबीलों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। परंतु इस प्रवास की प्रक्रिया का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष भी था। वह था सामाजिक–सांस्कृतिक एवं वैचारिक आदान–प्रदान की परंपरा, जिसको समझने के लिए रुहेलों की सामाजिक एवं वैचारिक व्यवस्था का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि यहाँ पर प्रवासित होने वाले रुहेला किस प्रकार अपनी सामाजिक प्रासंगिकता साबित कर रहे थे? अर्थात् कौन–सी गतिविधियों में अपने को संलग्न कर रहे थे? उसका सामाजिक महत्त्व क्या था? इसके अतिरिक्त इस बात का भी अध्ययन किया गया है कि रुहेलों की परंपरागत सामाजिक संरचना क्या थी और उसमें यहाँ पर क्या व्यवहारगत परिवर्तन आये?

मूलशब्द: 18वीं शताब्दी, सामाजिक व्यवस्था, रुहेलखण्ड

तारीख–ए–फ़िरोजशाही एवं नामा–ए–मुज़फ्फरी जैसे तत्कालीन स्रोतों से यह जानकारी प्राप्त होती है कि सल्तनत काल से ही भारतीय क्षेत्रों में अफगानों का प्रवास प्रारंभ हो चुका था और मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत भी अफगानों की प्रशासनिक एवं सैन्य व्यवस्था में महत्ता बनी रही। यद्यपि आरंभिक मुगल बादशाह जैसे बाबर, हुमायूँ एवं अकबर को यहाँ पर अपनी सत्ता स्थापित करने के दौरान उन्हें अपफगान विरासत एवं प्रतिरोध का सामना करना पड़ा था, यही कारण रहा कि इन्होंने अफगान कौम पर कम ही भरोसा किया परन्तु बाद के मुगल बादशाहों के शासन काल में अफगान मनसबदारों एवं सैनिकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।[3] पलायन की इसी परंपरा में अफगान अठारहवीं शताब्दी तक रुहेलखण्ड क्षेत्र में पर्याप्त संख्या में स्थापित हो चुके थे। यहाँ के सैन्य पेशों में उनकी उपस्थिति उल्लेखनीय थी। इसका प्रमुख कारण यह था कि इस समय रुहेलखण्ड में सैन्य रोजगार की बेहतर संभावनाएँ थीं जैसे यहाँ के क्षेत्रीय राजाओं एवं ज़मींदारों के उद्भव के दौरान उन्हें कुशल, लड़ाकू एवं बहादुर अफगान सैनिकों की आवश्यकता थी। अफगानों का यह प्रवास सैनिकों की इस माँग को पूरा कर रहा था।[4] साथ ही अफगानों को भी सैनिक पेशों में ही विशेष रुचि थी, क्योंकि वह अभी तक यहाँ पर स्थापित कृषि अर्थव्यवस्था से अपने को पूरी तरह से संबद्ध नहीं कर पाये थे। दूसरी तरफ उन्हें उनकी निजी रुचि के आधार पर भी सैनिक पेशा अधिक रुचिकर लगता था, जो कि अफगान समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा के अनुकूल था।

रुहेलखण्ड में सैनिको की आपूर्ति से संबंधित ऐसा भी नहीं है कि ये अफगान ही पूरी तरह से सैन्य आवश्यकताओं की आपूर्ति करते थे बल्कि यहाँ के ग्रामीण किसान समाज से भी बड़ी मात्रा में सैनिकों की आपूर्ति हो रही थी। इस सन्दर्भ में सीमा अल्वी का मानना है कि यहाँ पर उपस्थित प्रशिक्षित सैन्य कृषक एवं सामान्य कृषकों से सैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती थी। उन्होंने डर्क कोल्फ के इस विचार का खण्डन किया है कि शासक वर्ग सामान्य कृषकों से अपनी सैन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे, बल्कि उनका मानना है कि यहाँ पर प्रशिक्षित एवं सशस्त्र सैनिक कृषक भी थे, जो कि सैनिक पेशों से सम्बद्ध थे।[5] सैन्य व्यवस्था में स्थानीय आपूर्ति के बावजूद रुहेला अफगानों की सैनिक बाजार में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका बनी रही। इसके पीछे अफगानी समाज के कुछ अपने सामाजिक–आर्थिक कारण थे, जैसे अफगान यहाँ पर अपनी जीविका की तलाश में आये तो उन्हें अपनी लड़ाकू प्रवृत्ति एवं साहसिक भावना के अनुकूल सैनिक पेशा ही अधिक आकर्षक लगा, जिसके लिए उन्हें यहाँ आने का सबसे पहला अवसर गौरी के भारत अभियान के दौरान मिल गया था।[6] यद्यपि ब्रिटिश प्राच्यवादी विद्वानों जैसे इब्बटसन एवं जॉन स्ट्रेची ने अफगानों की लड़ाकू प्रवृत्ति को उनके हिंसक एवं बर्बर स्वभाव के रूप में वर्णित करने का प्रयास किया परंतु यह उनकी औपनिवेशिक मानसिकता को व्यक्त करता है। इसके विपरीत अफगानों की लड़ाकू प्रवृत्ति उनके मूल निवास मध्य एशिया की दुर्गम पहाड़ी इलाकों में जीवनयापन की कठिन परिस्थितियों के कारण थी। अफगानों की इसी साहसिक विशिष्टता ने उन्हें भारत में सैनिक पेशों में अधिक लोकप्रिय बनाया।[7]

अठारहवीं शताब्दी के मध्य अफगानों का पलायन रुहेलखण्ड क्षेत्र में जारी रहा। यहाँ पर इनकी बसावट का स्वरूप नगरीय था, जिसके कारण रुहेलखण्ड में शाहाबाद, बिसौली, आँवला, हाफिज़गंज, रामपुर, बरेली, पीलीभीत एवं शाहजहाँनपुर जैसी महत्त्वपूर्ण अफगान नगरों एवं कस्बों का विकास हो चुका था[8] इन अफगान बस्तियों के मध्य सैन्य पेशों के रूप में अपनी जीविका अपनाने की एक संस्कृति का प्रचलन था। इसका कारण यह था कि अफगानी समाज में सैनिकों की एक सामाजिक प्रतिष्ठा होती थी। उनको समाज में सम्मान की भावना से देखा जाता था।[9] साथ ही ये अफगान नगरों एवं कस्बों में सामूहिक भावना के आधार पर रहते थे और प्रशिक्षित एवं सैन्य साधनों से परिपूर्ण यह अफगान सैनिक सैन्य माँग की पूर्ति करते थे। ये यहाँ पर अफगान अपने को सैन्य पेशों से अधिक आसानी से जोड़ पा रहे थे। इसका कारण यह था कि उन्हें अपनी जीविका के लिए कुछ

महीनों के अन्तराल पर एकमुश्त नकद वेतन की प्राप्ति हो जाती थी, जबकि उन्हें कृषि जैसे ग्रामीण उत्पादन कार्य में रुचि नहीं थी क्योंकि यह पेशा उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक सोच से मेल नहीं खा पा रहा था।[10]

यद्यपि रुहेला अफगानों की सामाजिक व्यवस्था में सैन्य परंपरा की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी और रुहेलखण्ड क्षेत्र में स्थानीय राजाओं एवं ज़मींदारों के मजबूत होते सैन्य आधार में माँग के अनुरूप नौकरी भी प्राप्त कर रहे थे परंतु इस क्षेत्र में उनकी प्रासंगिकता का दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण था यहाँ पर रुहेला राज्य की स्थापना। इस सन्दर्भ में गुलिस्तान–ए–रहमत से सूचना मिलती है कि रुहेला सरदार दाउद खान ने अपने अन्तर्गत 200 अफगानों को संगठित कर यहाँ के ज़मींदारों को अपनी सैन्य सेवायें प्रदान की थी और शीघ्र ही बहुत से अफगान उसके नेतृत्व के अन्तर्गत एकत्रित हो गये थे। उसके उत्तराधिकारी नवाब अली मोहम्मद खान ने शीघ्र ही लगभग 15 हजार अफगानों की सेना एकत्र कर ली थी, जिसके बल पर उसने रुहेला राज्य की स्थापना की थी।[11] यही वह काल था, जब बड़ी संख्या में अफगान ऊपरी दोआब क्षेत्र में बस गये थे। हाफिज़ रहमत खान एवं नजीबुद्दौला जैसे रुहेला सरदारों के अधीन एक बड़ी अफगान फौज एकत्रित हो चुकी थी, जो क्षेत्र में अपनी सैन्य प्रासंगिकता को साबित कर रहे थे।[12] दूसरी तरफ रुहेला सरदारों ने अफगानों की बसावट को प्रोत्साहित कर रुहेला राज्य निर्माण के क्रम में सत्ता समर्थक वर्ग भी तैयार करने का प्रयास किया जो उनकी सत्ता की वैधता के लिए कार्य कर सकता था।

अफगानी समाज में सैन्य पेशा बहुत लोकप्रिय था और रुहेलखण्ड क्षेत्र में कमजोर केन्द्रीय मुगल सत्ता के दौरान क्षेत्रीय ज़मींदारों, राजाओं और रुहेला सरदारों ने अपनी प्रभुत्ता के विस्तार में इन अफगानों को सैनिकों के रूप में भर्ती किया था परंतु इस महत्ता के अतिरिक्त एक अन्य पक्ष पर गौर करना भी आवश्यक हो जाता है। जैसे उत्तर–पश्चिम क्षेत्रों से होने वाले दूरस्थ व्यापार में अफगानों की भूमिका। इस समय रुहेलखण्ड काफिला व्यापरियों के मध्य महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था। यहाँ पर उत्तर–पश्चिम के काबुल, कंधार एवं फारस से आने वाले कारवाँ व्यापारियों में अफगानों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी और इस व्यापारिक लेन–देन में अच्छी नस्ल के घोड़ों के व्यापार का प्रमुख योगदान था।[13] मध्य एशिया के अच्छी नस्ल के घोड़ों की माँग रुहेलखण्ड क्षेत्र में सदैव बनी रहती थी। इसमें संलग्न अफगान कारवाँ व्यापारी रुहेलखण्ड में घोड़ों की आपूर्ति कर अच्छा लाभ कमा रहे थे। इस व्यापार के माध्यम से अफगानों का यहाँ पर लगातार पलायन जारी था। घोड़ों के व्यापार के अतिरिक्त पश्चिम से सूखे मेवे, ऊन, कीमती पत्थर, कश्मीरी शॉल आदि भी लाकर यहाँ के नगरों एवं कस्बों से लाभ प्राप्त करते थे।[14] अतः रुहेलखण्ड में अफगानों के पलायन से संबंधित उनकी दोहरी भूमिका नजर आती है। एक तो वह इस आवागमन में सैनिकों की माँग–पूर्ति कर रहे थे, वहीं व्यापारिक लेन–देन में घोड़ों एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं का भी व्यापार कर रहे थे।

रुहेलखण्ड में अफगानों की बसावट एवं व्यापारिक संपर्क के अन्तर्गत यह मत भी देखने में आता है कि रुहेलखण्ड के एक युद्ध ग्रस्त एवं अशांत क्षेत्र होने के कारण ने यहाँ पर सैन्य आवश्यकता एवं पश्चिम से घोड़ों की माँग को बढ़ावा दिया था परंतु यह मत तार्किक प्रतीत नहीं होता है क्योंकि यह स्पष्ट है कि रुहेलखण्ड क्षेत्र आरंभ से ही संसाधन संपन्न क्षेत्र रहा था, इसकी समृद्धि की महत्ता आरंभिक मुस्लिम शासन की स्थापना से ही देखी जा सकती है। रुहेलखण्ड दूरस्थ व्यापारिक संपर्क मात्र इसकी क्षेत्रीय माँग के ही कारण नहीं था बल्कि यहाँ के वाणिज्यिक उत्पादों जैसे अनाज, चीनी, सूतीवस्त्र के साथ–साथ धातु एवं लकड़ी के हस्तशिल्प उत्पादों और औषधियों की माँग सदैव अन्य क्षेत्रों में बनी रहती थी, जो इसके व्यापारिक लेन–देन को प्रोत्साहित कर रही थी।[15] इसकी भौगोलिक संसाधन समृद्धता एवं संपन्न उत्पादन परंपरा भी अफगानों को यहाँ पर बसने हेतु प्रोत्साहित कर रही थी। इसकी संसाधन संपन्नता की महत्ता को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि जब गवर्नर–जनरल हेस्टिंग्स के कोर्ट ट्रायल के दौरान वर्क एवं फ्रांसिस कहते हैं कि ''वज़ीर ने हेस्टिंग्स के साथ मिलकर इस पूरे रुहेला राज्य को बेच दिया, जिसका सम्पूर्ण क्षेत्र एक बगीचे की तरह कृषि योग्य था और पृथ्वी पर एक अधिकतम उपजाऊ क्षेत्र वाला राज्य था।''[16]

यह रुहेलखण्ड की अपनी सामाजिक–आर्थिक समृद्धि ही थी, जिसने रुहेलखण्ड को एक सक्षम क्षेत्रीय राज्य का स्वरूप प्रदान करने में सहायता प्रदान की थी। यही कारण रहा था कि अठारहवीं शताब्दी तक रुहेला राज्य के अधीन बड़ी संख्या में रुहेला अफगानों का विस्तार यहाँ पर हो चुका था। यहाँ पर रुहेला अफगानों की अनेक बस्तियाँ स्थापित हो चुकी थी, जहाँ पर वह अपनी सामाजिक व्यवस्थाओं एवं परंपराओं का पालन कर रहे थे।[17] इस सन्दर्भ में कुछ प्रमुख तत्कालीन स्रोतों जैसे खुलासत–उल–अंसाब, गुलिस्तान–ए–रहमत, तबारीख–ए–हाफिज़ रहमत खानी एवं हयात–ए–अफगानी से रुहेला अफगानों की सामाजिक संरचना एवं व्यवस्थाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

जैसा कि हयात–ए–अफगानी में मोहम्मद हयात खान वर्णित करते हैं कि रुहेलखण्ड में स्थापित होने वाले रुहेला अफगानों में अधिकांशतः युसुफजई कबीले से संबंध रखते थे, जिन्होंने रुहेलखण्ड में अपनी सत्ता की स्थापना की थी। वह वर्णित करते हैं कि–

"युसुफजई कुछ हद तक बलिष्ठ शरीर के होते हैं, लम्बे शरीर, गोरा रंग और उच्च सहनशीलता वाले होते हैं, राजमार्गों पर लूटपाट, पशुओं की चोरी करना, घरों में सेंधमारी और सभी प्रकार की हिंसा से परिचित है, जो कभी–कभी इनके मुखिया सरदारों की जीविका का साधन होता है। इनमें से कुछ नौजवान सैनिक के पेशों को अपनाते हैं, जहाँ पर उनकी गिनती अच्छे सैनिकों की होती है। बहुत कठिनता से कुछ युसुफजई व्यापार एवं हस्तशिल्प उत्पादन में लगे मिल पाते हैं न कि इसलिए कि वह इसमें विशेष योग्यता रखते हैं बल्कि इसलिए कि उनमें सैनिक होने की क्षमता नहीं थी।"[18]

जैसा कि इब्बटसन ने अपनी रिपोर्ट (1881) में अफगानों के बारे में लिखा है कि –

"पठान कौम अपने आस–पास पाई जाने वाली सभी जातियों में सबसे बर्बर एवं हिंसक होती है। वह खून के प्यासे, निर्दयी और उच्च दर्जे के प्रतिशोधी होते हैं। उन्हें विश्वास करने योग्य नहीं माना जाता है, उनके बारे में उनके पड़ोसियों में 'अफगान–बे–इमान' की कहावत प्रचलित है। पठान एक क्षण तो सन्त की तरह हो जाते हैं तो अगले ही क्षण वह एक दैत्य की प्रकृति में आ जाते हैं। उनके मध्य मर्दाना स्वतंत्रता की भावना है, जिसने उनका भारत जैसे देश में रहने का रास्ता साफ किया।"[19]

जबकि हयात–ए–अफगानी में भी उनके दैनिक जीवन एवं व्यवहारों का उल्लेख मिलता है, यहाँ पर उनके सम्मान एवं दायित्व से संबंधित तीन मुख्य बातों को इस प्रकार दर्शाया गया है –

"उनकी शरण में आये प्रत्येक शरणार्थी की सुरक्षा प्रत्येक अफगान का दायित्व होता है, चाहे वह घातक शत्रु ही क्यों न हो, जो शरणार्थी के रूप में आया है। इसके लिए एक कहावत उनमें प्रचलित है कि उनकी शरण में यदि प्रकृति द्वारा निर्मित प्रकृति का सबसे गंदा प्राणी सुअर भी उनकी शरण में आये, उसकी भी सुरक्षा की जानी चाहिए। दूसरे गलत तरह से किये गये किसी नुकसान का बदला अवश्य लिया जाना चाहिए, चाहे इसके लिए लम्बे समय तक इन्तजार करना पड़े और पिता का दायित्व पुत्र

पर आ जाये परंतु ब्याज के साथ बदला पूरा किया जाना चाहिए। तीसरा अतिथि सत्कार चाहे वह अतिथि पहचान का हो या फिर अजनबी, उसके खाने, रहने की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। अतिरिक्त मॉस, मिठाईयों एवं खमीर की रोटी से स्वागत किया जाना चाहिए।"[20]

उपर्युक्त उल्लेखों से एक दृष्टि में तो ऐसा प्रतीत होता है कि सभी अफगान अपनी प्रकृति में बर्बर एवं असभ्य होते थे और वह सदैव हिंसक गतिविधियों में संलग्न रहते थे। परंतु असभ्यता का यह तथ्य इब्बटसन की रिपोर्ट में ब्रिटिश प्राच्यवादी विचारधारा का पोषण करता है, जिसमें उन्होंने अपनी सभ्यता के मापन के पैमाने पर रुहेलों को हिंसक एवं बर्बर कहा है। यह विश्वसनीय नहीं है बल्कि अफगानों की समाज व्यवस्था से ही जानकारी प्राप्त होती है कि अपनी कबीलायी एवं घुमक्कड़ जीवनशैली के अनुरूप उनमें अतिरिक्त साहस एवं संघर्ष के गुण थे, जो कि उनके कबीलों की सुरक्षा की भावना के अनुरूप थे परंतु एक लंबी कालावधि के दौरान रुहेलखण्ड में बसने से उनके रहन–सहन एवं जीवनशैली में परिवर्तन आ गया था। वह अब स्थायी जीवन शैली में ढल रहे थे, जिसका प्रभाव उनकी सामाजिक संरचना पर भी पड़ रहा था परंतु परिवर्तन की इस प्रक्रिया में भी रुहेलखण्ड में रुहेला राज्य के निर्माण क्रम में अफगानों की साहसिक एवं लड़ाकू प्रवृत्ति काम आई, जिसके अन्तर्गत वह यहाँ पर सैनिकों की एक सम्मानजनक श्रेणी के रूप में गिने जाने लगे थे।

रुहेलखण्ड में प्रवासित होने के उपरांत भी रुहेला अफगानों में उनकी कुछ मूलभूत सामाजिक परंपरायें यहाँ पर बनी रहीं। जैसे उनके मध्य परस्पर समानता की भावना, जो मध्य एशिया में कबिलाई समानता के अनुरूप थी। साथ ही समानता की इस भावना को बनाये रखने के पीछे एक सबसे महत्वपूर्ण कारण यह भी था कि उनके मध्य यहाँ पर प्रतीकात्मक रूप से समानता एवं एकता की भावना बनी रहे, जिसके लिए प्रयास न सिर्फ सामान्य अफगानी समाज में देखने को मिलता है बल्कि शासक वर्ग के स्तर पर भी देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए बंगश अफगान एवं रुहेला नवाब अपनी–अपनी सेना को संगठित करने एवं उसके मध्य एकता की भावना बनाये रखने के लिए अपने सभी सैनिकों के साथ एक सी पोशाक में जमींन में बिछी कालीन पर बैठकर उनके साथ भोजन करते थे और आवश्यक बातों पर सलाह–मशविरा करते थे।[21] संभवतः इसके पीछे उद्देश्य आपस में एकता एवं संगठन की भावना को बनाये रखना था। यद्यपि समानता एवं एकता की यह भावना कबीलायी परंपरा से थी, परंतु फिर भी इसका उपयोग रुहेलखण्ड की बदली परिस्थितियों में नई चुनौतियों का सामना करने के सन्दर्भ में किया जा रहा था।

इस कबीलाई समानता की भावना को मात्र शासक वर्ग के द्वारा ही प्रोत्साहित नहीं किया जा रहा था। बल्कि साधारण रुहेला अफगान भी अफगानी विरासत का पालन कर रहे थे। इसके उदाहरण उनके मध्य होने वाले किसी त्यौहार, सार्वजनिक समारोहों एवं वैवाहिक अवसरों पर देखे जा सकते थे जैसा कि नज़मूल गनी अखबार–उल–सनादीद में रुहेलों की सामाजिक समानता की बात करते हुए बताते हैं कि "इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता था कि कौन सरदार है और कौन सिपाही, सार्वजनिक अवसरों पर सभी समान होते थे और उनकी वेश–भूषा एवं पहनावा एक समान होता था, जिसके कारण इस बात का अन्तर कर पाना कठिन होता था कि कौन सिपाही है और कौन सरदार है। सभी आपस में समानता का व्यवहार करते थे। यहाँ पर अफगान अभी–भी अपनी जीवनशैली में सादगी एवं समानता का अधिक–से–अधिक पालन कर रहे थे। उनका पहनावा साधारण था और कम से कम आवश्यकता में अपना गुजारा करते थे।"[22]

उनकी वेशभूषा पहनावे के संबंध में हयात–ए–अफगानी से वर्णित मिलता है कि उनके पहनावे का स्वरूप साधारण था। इसके लिए वह मोटे कोरस प्रकार के सूती वस्त्रों का प्रयोग करते थे। मोटे कपड़े के लम्बे कुर्ते एवं ढीले–ढाले तम्बान उनके मूल निवास की विशेष पहचान थी, जिसका वह अपने स्थानान्तरण एवं प्रवास के दौरान रुहेलखण्ड में भी प्रयोग करते रहे। उनके पहनावे की एक अन्य विशेषता यह मिलती है कि वह नीले रंग का एक बड़ा रुमाल या चादर साथ में लेकर चलते थे, जिसे वह अपनी कमर पर भी बाँधते थे, साथ ही टेढ़ी पगड़ियाँ और तनासुबे अफगानों को रुहेलखण्ड में अन्य कौमों से अलग पहचान दिलाती थी और यह वेश–भूषा उनके सुडौल एवं लम्बे–चौड़े शरीर पर काफी आकर्षक लगती थी।[23]

इस साधारण वेश–भूषा के समान्तर उनके स्वभाव में कुछ आदतन विशिष्टाएँ भी थीं, जिसके कारण अफगान यहाँ के सैन्य बाजार में विशेष स्थान रखते थे जैसे उनकी जीवन–शैली एवं दिन प्रतिदिन की आदतों में एक विशेष गुण था औजार प्रिय परंपरा। यह उनके मूल वतन खोरासान से उनके साथ आया था, इस परंपरा के अन्तर्गत हथियार रखना, उनको दुरुस्त करना, अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण करना, अच्छी गुणवत्ता की तलवारें अपने साथ लेकर चलना उनकी सैनिक जरुरत तो थी ही परंतु यह उनकी खोरासान के पहाड़ी क्षेत्रों में रहने के कारण आदतन भी थी। इन पहाड़ी क्षेत्रों में अपने कबीले की रक्षा करना, अपने मवेशियों को हिंसक जानवरों एवं चोरी से बचना एवं अपनी आजीविका के लिए संघर्ष का रास्ता अपनाना, उनके दैनिक जीवन की प्रक्रिया थी।[24] स्वाभाविक रूप से इन विपरीत परिस्थितियों ने अफगानों के चरित्र में अतिरिक्त साहस एवं संघर्ष को उत्पन्न किया था और जब अपने इन्हीं साहसिक सैन्य गुणों के साथ यह रोजगार की तलाश में रुहेलखण्ड में प्रवासित हुए तो सैनिकों के रूप में अफगानों ने अपनी एक अलग पहचान एवं माँग बनाई थी।

अफगानों के लिए इस सैन्य पेशे का सामाजिक महत्त्व भी था क्योंकि इसे अफगानों के मध्य गर्व एवं गौरव का विषय समझा जाता था और सैनिक पेशों के अतिरिक्त अन्य किसी पेशे को वह निम्न कोटि की आजीविका मानते थे। परंतु जब रुहेलों ने रुहेलखण्ड में अपना राज्य कायम कर लिया तो फिर उन्होंने कृषि, व्यापार एवं अन्य कारीगरों, शिल्पकारों को संरक्षण प्रदान किया और अपने क्षेत्रों में निर्माण कार्य को प्रोत्साहित किया। फिर भी यहाँ पर अफगानों के द्वारा अपनी पुत्री के विवाह हेतु किसी अफगान सैनिक को ही महत्त्व दिया जाता था। उनके लिए यह सामाजिक प्रतिष्ठा की बात की।[25] परंतु जब 1774 ई. में मीरनपुर कटरा के युद्ध में रुहेलों की पराजय हुई तो रुहेलों अफगानों को रुहेलखण्ड में कृषि एवं हस्तशिल्प जैसे पेशों को भी अपनाने के लिए बाध्य होना पड़ा।

दीर्घकालीन प्रवास के क्रम में अफगानी समाज में समानता एवं सादगी की भावना के साथ–साथ उनकी सामाजिक जिन्दगी में परिवर्तनों ने भी स्थान बना लिया था, जिनको देखना आवश्यक होगा जैसे जो अफगान खोरासान में घुमक्कड़ एवं स्थानांतरणशील जीवनयापन कर रहे थे और कबिलाई समानता की भावना के साथ कम–से–कम संसाधनों में अपना गुजारा कर रहे थे, रुहेलखण्ड में वही अफगान स्थाई जीवनयापन करने लगे थे। वह यहाँ पर निर्माण कार्यों को भी कर रहे थे जैसे रुहेला अफगानों ने नई इमारतों, किलों, महलों, मस्जिदों, मदरसों का निर्माण करवाया। वह नये नगरों एवं कस्बों की स्थापना कर रहे थे। मदरसों एवं मस्जिदों का निर्माण करवाकर वहाँ पर अपनी नई पीढ़ी की तालीम की व्यवस्था कर रहे थे। इसी समय आँवला, बरेली, हाफिज़गंज, पीलीभीत, शहाबाद जैसे बड़े नगरों के साथ–साथ अनेक अफगान बस्तियों की स्थापना रुहेलखण्ड में हुई जो रुहेलों को स्थायी जीवन शैली में ढाल रही थी।[26]

इस स्थायित्वपूर्ण सामाजिक जीवन का प्रभाव उनकी समानता की भावना पर भी पड़ा। इनके मध्य भी अब सामाजिक असमानता एवं

विभाजन की व्यवस्था घर करने लगी थी। इनमें भी शेख, सैयद एवं शिया–सुन्नी का विभाजन होने लगा था। रुहेला अफगानों के मध्य शेख एवं सैयद के रूप में समाजिक विभाजन उपस्थित हो गया था। सैयद को अधिक सम्मानजनक स्थान प्राप्त होता था।[27] इसका उदाहरण हयात–ए–हाफिज़ रहमत खान में देखा जा सकता है, जहाँ पर वर्णित है कि रुहेला सरदार हाफिज़ रहमत खान सैयदों का बहुत आदर करता था और उसके दरबार में किसी सैयद के आने पर वह उसको उपहार आदि देकर उसका सम्मान करता था।[28] कहने का तात्पर्य यह है कि अब तक अफगान कबीलाई समानता की भावना पर रुहेलखण्ड की परंपरागत सामाजिक व्यवस्था का भी प्रभाव पड़ने लगा था। व्यावहारिक रूप में अफगानों में सामाजिक–आर्थिक असमानता उपस्थित हो चुकी थी क्योंकि यहाँ पर अफगान अब तक शासक, अमीर, जागीरदार, ज़मींदार, व्यापारी, साधारण सैनिक के साथ–साथ साधारण अफगानी समाज के रूप में बंट चुका था। उनके मध्य अफगानी समानता सिर्फ प्रतीकात्मक रूप से ही रह गई थी।

निष्कर्षतः हम देख सकते हैं कि रुहेलखण्ड में प्रवासित होने वाले प्रथम पीढ़ी के रुहेलों के मध्य जहाँ सामाजिक समानता की भावना बनी रही, वहीं बाद की पीढ़ी अपनी अफगान विरासत से दूर होती चली गई। इसका प्रमाण रुहेला राज्य के पतन के सन्दर्भ में देखा जा सकता है जैसाकि नवाब अली मोहम्मद खान, हाफिज़ रहमत खान, दुन्दे खान, सरदार खान, फतेह खान, नजीबुद्दौला जैसे प्रथम पीढ़ी के रुहेला सरदार अपनी अफगान विरासत के अनुकूल जितने अधिक संघर्षशील सैन्य गुणों से युक्त एवं अफगानी भावना से मिलकर लड़ रहे थे, अब वह नवोदित रुहेला पीढ़ी में देखने को नहीं मिल रहा था। यह पीढ़ी आरामतलब एवं राजसी शानो–शौकत के साथ राजकुमारों का जीवनयापन कर रही थी। यह स्वार्थी एवं विश्वासघाती हो गये थे, इनमें अफगानी एकता की भावना नहीं रह गई थी। ये मुगल दरबारी विरासत के आधार पर राजसी जीवन जीने लगे थे[29] इसी का परिणाम था कि 1774 ई. में रुहेला युद्ध में हाफिज़–रहमत–खान को इस नई रुहेला पीढ़ी का पूरा सहयोग एवं समर्थन नहीं प्राप्त हुआ और रुहेलों की हार हुई।[30]

सन्दर्भ सुची

1. बरेलवी, अल्ताफ अली, हयात–ए–हाफिज़ रहमत खान, पृ. 41–42.
2. खाँ, हाफिज़ नियाज मोहम्मद, तारीख–ए–रुहेलखण्ड उर्दू, पृ. 2; दूर अफरीदी, तारीख–ए– रुहेलखण्ड, पृ. 21–22.
3. जोशी, रीता, द अफगान नोविलटी एण्ड द मुगल्स (1526–1707), पृ. 73–74.
4. अफरीदी, दूर, तारीख–ए–रुहेलखण्ड, पृ. 22–24; अल्ताफ अली बरेलवी, हयात–ए–हाफिज़ रहमत खान, पृ. 42–43.
5. अल्वी, सीमा, द सिपॉय एण्ड द कंपनी : ट्रेडीसन एण्ड ट्रान्सिसन इन नॉर्दर्न इण्डिया 1770–1830, नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006, पृ. 12–13.
6. मरहूम, खालिद हसन खाँ, तारीख–ए–रुहेलखण्ड, पृ. 17–19.
7. वही, पृ. 24–40; निजामी, मुस्तफा हुसैन, तारीख–ए–रुहेलखण्ड, गुल–ए–रहमत का तकाबुली जायजा, पृ. 16–19.
8. खाँ, मौलवी मती उल्ला, तारीख–ए–शाहजहाँनपुर, तारीख मुती, भाग–1, पृ. 107, 493; खान, मुजफ्फर हुसैन, नामा–ए–मुज़फ्फरी, पृ. 198, 203–204.
9. सिद्दीकी, नफीश, रुहेला इतिहास एवं संस्कृति, पृ. 96–97.
10. हेमिल्टन, चार्ल्स, ऐन हिस्टोरिकल रिलेशन ऑफ द ओरिजन, प्रोग्रेस एण्ड फाइनल डिसोल्यूसन ऑफ द गवर्नमेन्ट ऑफ रोहिल्ला अफगान, इन नॉर्दर्न प्रॉविन्सस ऑफ हिन्दोस्तान, 1787, पृ. 40–41; खान, गुलाम हुसैन, द सियार–उल–मुताखरीन, 1790, पृ. 3, 232–35.
11. बहादुर, नवाब मुस्तजाब खान, गुलिस्तान–ए–रहमत 1792, (अनु.) इलियट, चार्ल्स, द लाइफ ऑफ हाफ़िज–उल–मुल्क हाफ़िज रहमत खान, पृ. 77.
12. हेमिल्टन, चार्ल्स, हिस्ट्री ऑफ रोहिल्ला अफगान्स, पृ. 40, 54.
13. गोमन्स, जॉस, 'द हॉर्स ट्रेड इन एटीन्थ सेन्चुरी साउथ एशिया', पृ. 223, 237.
14. फ्रेंकलिन, विलियम, द हिस्ट्री ऑफ द रेन ऑफ शाह आलम, पृ. 57.
15. एटकिन्सन, स्टेटिस्टिकल डिस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल अकाउंट ऑफ द नॉर्थ–वेस्टर्न प्रॉविन्सस ऑफ इण्डिया रुहेलखण्ड डिवीजन, खण्ड–5, भाग–1, पृ. 570–578.
16. स्ट्रेची, जॉन, हेस्टिंग्स एण्ड रुहेला वार, पृ. 25.
17. शबीहुद्दीन, तारीख–ए–शबीह, पृ. 21–33.
18. खान, मोहम्मद हयात, हयात–ए–अफगानी, पृ. 121.
19. इब्बटसन, डिनजिल, अ ग्लोसरी ऑफ द ट्राइब्स एण्ड कास्टस ऑफ द पंजाब एण्ड नॉर्थ–वेस्ट फ्रंटियर प्रॉविन्सस, लाहौरः सिविल एण्ड मिलिटरी गजेट, 1911, पृ. 200–2010.
20. खान, मोहम्मद हयात, हयात–ए–अफगानी, पृ. 121–122.
21. इरवाइन, विलियम, द बंगश नवाब ऑफ फर्रुखाबादः अ क्रोनिकल (1713–1857), जनरल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, भाग–1 और 2, पृ. 47–48, 1878–79, पृ. 259–383.
22. गनी, नजमूल, अखबार–उल–सनादीद, भाग–2, पृ. 503–4.
23. अफगानी, सैयद जमालुद्दीन, तारीख–ए–अफगानिस्तान, लाहौर : इस्लामिया प्रिंटिंग प्रेस, 1990, पृ. 112–14; खान, मोहम्मद हयात, हयात–ए–अफगानी, पृ. 207.
24. वही, पृ. 119–20.
25. सिद्दीकी, नफीज, रुहेला इतिहास एवं संस्कृति, पृ. 490–94.
26. फ्रेंकलिन, विलियम, द हिस्ट्री ऑफ द रेन ऑफ शाह आलम, पृ. 57–59.
27. हुसैन, गुलाम, सियर–उल–मुताखरीन, 1790, पृ. 235–36; एटकिन्सन, रुहेलखण्ड डिवीजन, खण्ड–ट, भाग–1, पृ. 616.
28. अली, सैयद अल्ताफ, हयात–ए–हाफिज़ रहमत खान, पृ. 336–337.
29. हेमिल्टन, चार्ल्स, हिस्ट्री ऑफ रोहिल्ला अफगान्स, पृ. 208–209.
30. खान, गुलाम हुसैन, द सियार–उल–मुताखरीन, खण्ड–4, पृ. 52, 55.